v.iz

M. Europe. Paper IV

Q. Role of Bismark in the unification of Germany?

Ans:- मैटर्निख के प्रतिक्रियावादी व्यवस्था के बावजूद कई कारणों से जर्मनी में राष्ट्रीयता की शक्ति का विकास हो रहा था। जोलवरीन की स्थापना से जर्मनी आर्थिक दृष्टिकोण से एक हो गया था। इस काल में जर्मनी के कवि, दार्शनिक इत्यादि अपने साहित्यिक रचनाओं द्वारा भी राष्ट्रीयता की भावना को विकसीत कर रहे थे लेकिन 19वीं शताब्दी के मध्य तक, जर्मन राष्ट्रीयता की कहानी असफलता की कहानी रही और इन असफलताओं से उदारवादी आन्दोलन के बदले में राष्ट्रवादी आन्दोलन सत्तावादी तत्वों के हाथ में आ गया। 1859 से 1871 के दौरान बिस्मार्क ने प्रशा की सेना को मजबूत कर तथा युद्ध और सफल राजनीतिक दाँव-पेंच के सहयोग से जर्मनी की एकता कायम की। बिस्मार्क को यह स्पष्ट हो गया था कि जबतक आस्ट्रिया का प्रभाव जर्मनी की राजनीति पर रहेगा तब तक, जर्मनी का

चोट [illegible] देखा

एकीकरण असंभव है। ~~इसके साथ साथ बिस्मार्क से यही समझती है लेकिन~~ बिस्मार्क को यह विश्वास हो गया था कि प्रशा की समस्या बात से नहीं रक्त और तलवार से सुलझेगी। उसके अनुसार प्रशा के भविष्य का निर्णय पार्लियामेंट नहीं बल्कि उसकी सेना करेगी।

बिस्मार्क का कार्यक्रम उसके मस्तिष्क में स्पष्ट था। प्रशा की सेना को अद्वितीय बनाकर उसकी सहायता से प्रशा का विस्तार करना और आस्ट्रिया को युद्ध में पराजित कर समस्त जर्मन राज्यों का प्रशा के नेतृत्व में जर्मन रूप से संगठित करना। 1862 में बिस्मार्क प्रशा का प्रधानमंत्री बना और उस समय प्रथम विलियम प्रशा का राजा था। जो सैनिक प्रवृति का था। इसी समय से सेना को शक्तिशाली बनाने का उपाय आरंभ हो गया। लेकिन संसद के उदारवादी नेता जर्मनी के एकीकरण के लिए तलवार का सहारा नहीं लेना चाहते थे। उनका कहना था कि जब देश में राष्ट्रीयता का प्रचार होगा और जनमत एकीकरण के पक्ष में प्रबल होगा तो फिर कोई शक्ति देश की एकीकरण को नहीं रोक सकती। पर विलियम को जनमत पर नहीं सैनिक शक्ति पर विश्वास था इसलिए इन उदारवादियों ने सेना में सुधार के लिए आवश्यक बजट को अस्वीकार कर दिया। इस समय बिस्मार्क ही एक ऐसा व्यक्ति था, जो संसद के विरुद्ध राजा के तरफ से लड़ता रहा और अपनी नीति कुशलता द्वारा संसद के विरोध के बावजूद सेना को संगठित करने में सफल हुआ। पार्लियामेंट सदा बजट को अस्वीकार करती गई। लेकिन बिस्मार्क हर संभव उपाय से धन-एकत्रित कर प्रशा के सैन्य शक्ति को बढ़ाता गया जिससे वह यूरोप की सर्वश्रेष्ठ सेना हो गई।

सैनिक शक्ति संगठित करने के बाद बिस्मार्क ऐसी अन्त-

कूटनीतिक स्थिति तैयार करना चाहता था कि जब आस्ट्रिया से उसका युद्ध हो तो पड़ोसी राज्य आस्ट्रिया की सहायता न करें। क्रीमिया युद्ध के बाद रूस और आस्ट्रिया के बीच मनमुटाव चल रहा था। क्रीमिया युद्ध में तटस्थ नीति अपनाने से तथा पोलैण्ड वालों के विद्रोह के खिलाफ रूस की सहायता कर बिस्मार्क रूस की सहानुभूति प्राप्त कर लिया था। एक व्यक्तिगत समझौता कर बिस्मार्क फ्रांस की भी मित्रता प्राप्त कर ली।

बिस्मार्क युद्ध द्वारा जर्मन एकीकरण की योजना बनाने लगा। श्लेसविग तथा होल्सटीन नामक दो प्रदेश को लेकर डेनमार्क के साथ युद्ध जर्मन एकीकरण की दिशा में पहला कदम था। इन प्रदेशों पर डेनमार्क के राजा का शासन चल रहा था लेकिन इन प्रदेशों का डेनमार्क राज्य से कोई संबंध नहीं था। होल्सटीन के अधिकतर निवासी जर्मन जाति के थे और वे जर्मन जातियों के साथ रहना चाहते थे। प्रशा इन जर्मन जातियों के समूह का समर्थक था। डेनमार्क के उत्तराधिकार की समस्या ने इस प्रश्न को और भी जटिल बना दिया। 1852 के लंदन संधि द्वारा निश्चित हो चुका था कि इन प्रदेशों को डेनमार्क राज्य में नहीं मिलाया जा सकता है लेकिन 1863 में डेनमार्क के नया राजा नवम क्रिश्चियन ने इन प्रदेशों को डेनमार्क में मिलाने की कोशिश की। बिस्मार्क के लिए ये प्रदेश बहुत ही महत्वपूर्ण थे यद्यपि बिस्मार्क डेनमार्क को अकेले हरा सकता था लेकिन कुछ कारणों से उसने इन आक्रमणों में आस्ट्रिया को भी साथ कर लिया। इन प्रदेशों की समस्याओं के बहाने वह आस्ट्रिया के साथ युद्ध कर सकता था। 1864 में आस्ट्रिया और प्रशा की संयुक्त सेना ने डेनमार्क को बुरी तरह पराजित किया। और संधि के समझौता द्वारा इन दोनों प्रांतों पर प्रशा और आस्ट्रिया का संयुक्त अधिकार हो गया। लेकिन होल्सटीन में आस्ट्रिया को तथा श्लेसविग में प्रशा को शासन नीति का अधिकार मिला।

यह समझौता बिस्मार्क की एक कूटनीतिक विजय थी, क्योंकि वह चाहता था। आस्ट्रिया-प्रशा के लिए यह संभव नहीं था कि आस्ट्रिया तब तक इन प्रदेशों पर शासन कायम करता। होल्सटीन प्रशा के अधीन राज्य में भी घिरा हुआ था। बिस्मार्क आस्ट्रिया से लोहा लेना चाहता था और इस समझौते से संघर्ष की काफी गुंजाइश थी।

लेकिन युद्ध से पहले बिस्मार्क अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति तैयार करना चाहता था कि युद्ध में कोई भी राज्य आस्ट्रिया की मदद न करे। रूस प्रशा के पक्ष में था ही। इंग्लैण्ड का रुख भी सहानुभूतिपूर्ण था। बिस्मार्क ने इटली को वेनेशिया का लालच देकर अपने पक्ष में कर लिया

Q. Role of Bismark in the unification of Germany?

Ans:- मैटरनिख के प्रतिक्रियावादी व्यवस्था के बावजूद कई कारणों से जर्मनी में राष्ट्रीयता की शक्ति का विकास हो रहा था। झौलवरीन की स्थापना से जर्मनी आर्थिक दृष्टिकोण से एक हो गया था। इस काल में जर्मनी के कवि, दार्शनिक इत्यादि अपने साहित्यिक रचनाओं द्वारा भी राष्ट्रीयता की भावना को विकसित कर रहे थे लेकिन 19वीं शताब्दी के मध्य तक जर्मन राष्ट्रीयता की कहानी असफलता की कहानी रही और इन असफलताओं से उदारवादी आन्दोलन के बदले में राष्ट्रवादी आन्दोलन सत्तावादी तत्वों के हाथ में आ गया। 1859 से 1871 के दौरान बिस्मार्क ने प्रशा की सेना को मजबूत कर तथा युद्ध और सफल राजनीतिक दाँव-पेंच के सहयोग से जर्मनी की एकता कायम की। बिस्मार्क को यह स्पष्ट हो गया था कि जबतक आस्ट्रिया का प्रभाव जर्मनी की राजनीति पर रहेगा तब तक जर्मनी का एकीकरण असंभव है। ~~इसे स्वयं [illegible] बिस्मार्क से नहीं सुलझती है बल्कि~~ बिस्मार्क को यह विश्वास हो गया था कि प्रशा की समस्या भाषण से (चोट के ढंग क देखा) रक्त और तलवार से सुलझेगी। 1863 उसके अनुसार प्रशा के भविष्य का निर्णय पार्लियामेंट नहीं बल्कि उसकी सेना करेगी।

बिस्मार्क का कार्यक्रम उसके मस्तिष्क में स्पष्ट था। प्रशा की सेना को अद्वितीय बनाकर उसकी सहायता से प्रशा का विस्तार करना और आस्ट्रिया को युद्ध में पराजित कर समस्त जर्मन राज्यों का प्रशा के नेतृत्व में संघीय रूप से संगठित करना। 1862 में बिस्मार्क प्रशा का प्रधानमंत्री बना और उस समय प्रथम विलियम प्रशा का राजा था। जो सैनिक प्रवृति का था। इसी समय से सेना को शक्तिशाली बनाने का उपाय आरंभ हो गया। लेकिन संसद के उदारवादी नेता जर्मनी के एकीकरण के लिए तलवार का सहारा नहीं लेना चाहते थे। उनका कहना था कि जब देश में राष्ट्रीयता का प्रचार होगा और जनमत एकीकरण के पक्ष में प्रबल होगा तो फिर कोई शक्ति देश की एकीकरण को नहीं रोक सकती। पर विलियम को जनमत पर नहीं सैनिक शक्ति पर विश्वास था इसलिए इन उदारवादियों ने सेना में सुधार के लिए आवश्यक बजट को अस्वीकार कर दिया। इस समय बिस्मार्क ही एक ऐसा व्यक्ति था, जो संसद के विरुद्ध राजा के तरफ से लड़ता रहा और अपनी नीति कुशलता द्वारा संसद के विरोध के बावजूद सेना को संगठित करने में सफल हुआ। पार्लियामेंट सदा बजट को अस्वीकार करती गई। लेकिन बिस्मार्क हर संभव उपाय से धन-एकत्रित कर प्रशा के सैन्य शक्ति को बढ़ाता गया जिससे वह यूरोप की सर्वश्रेष्ठ सेना हो गई।

सैनिक शक्ति संगठित करने के बाद बिस्मार्क ऐसी अन्त-

2.

राष्ट्रीय स्थिति तैयार करना चाहता था कि जब आस्ट्रिया के साथ युद्ध हो तो पड़ोसी राज्य आस्ट्रिया की सहायता न करे। क्रीमिया युद्ध के बाद रूस और आस्ट्रिया के बीच मनमुटाव चल रहा था। क्रीमिया युद्ध में तटस्थ नीति अपनाने से तथा पोलैण्ड वाले के विद्रोह के खिलाफ रूस को सहायता कर बिस्मार्क रूस की सहानुभूति प्राप्त कर लिया था। एक व्यापारिक समझौता कर बिस्मार्क फ्रांस की भी मित्रता प्राप्त कर ली।

बिस्मार्क युद्ध द्वारा जर्मन एकीकरण की योजना बनाने लगा। श्लेषविग तथा हौल्सटीन नामक दो प्रदेश को लेकर डेनमार्क के साथ युद्ध जर्मन एकीकरण की दिशा में पहला कदम था। इन प्रदेशों पर डेनमार्क के राजा का शासन चल रहा था लेकिन इन प्रदेशों का डेनमार्क राज्य से कोई संबंध नहीं था। हौल्सटीन के अधिकतर वासिंदे जर्मन जाति के थे और वे जर्मन जातियों के साथ रहना चाहते थे। प्रशा इन जर्मन जातियों के उपद्रव का समर्थक था। डेनमार्क के उत्तराधिकार की समस्या ने इस प्रश्न को और भी जटिल बना दिया। 1852 के लंदन संधि द्वारा निश्चित हो चुका था कि इन प्रदेशों को डेनमार्क राज्य में नहीं मिलाया जा सकता है लेकिन 1863 में डेनमार्क के नया राजा नवम् की क्रिश्चयन ने इन प्रदेशों को डेनमार्क में मिलाने की कोशिश की। बिस्मार्क के लिए ये प्रदेश बहुत ही महत्वपूर्ण थे यद्यपि बिस्मार्क डेनमार्क को अकेले हरा सकता था लेकिन कुछ कारणों से उसने इन आक्रमणों में आस्ट्रिया को भी साथ कर लिया। इन प्रदेशों की समस्याओं के बहाने वह आस्ट्रिया के साथ युद्ध कर सकता था। 1864 में आस्ट्रिया और प्रशा की संयुक्त सेना ने डेनमार्क को बुरी तरह परास्त किया। ग्रेस्टइन के समझौता द्वारा इन दोनों प्रदेशों पर प्रशा और आस्ट्रिया का संयुक्त अधिकार हो गया। लेकिन हौल्सटीन में आस्ट्रिया को तथा श्लेसविंग में प्रशा को शासन का अधिकार मिला।

यह समझौता बिस्मार्क की एक कूटनीतिक विजय थी, हौल्सटीन आस्ट्रिया से दूर पड़ता था इसकारण आस्ट्रिया के लिए यह संभव नहीं था कि वह अधिक दिनों तक इस प्रदेश पर अपना प्रभुत्व कायम रख सके। हौल्सटीन प्रशा के आर्थिक संघ में भी सम्मिलित हो चुका था। बिस्मार्क आस्ट्रिया से लोहा लेना चाहता था और इस समझौते में संघर्ष की काफी गुंजाइश थी।

लेकिन युद्ध के पहले बिस्मार्क ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति बना देना चाहता था कि यूरोप के कोई भी राज्य आस्ट्रिया की मदद न करें। रूस प्रशा के पक्ष में था ही। इंगलैण्ड का रुख भी सहानुभूतिपूर्ण था।